Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 1

ईंटें, मनकें तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि → नहर दोहरी जुते अनाज

1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची बनाइये। इन वस्तुओं के उपलब्ध कराने वाले समूहों की पहचान कीजिए।

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची निम्नलिखित है –

1. पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद
2. मांस तथा मछली
3. गेहूं, जौ, दाल, सफेद–चना, तिल, बाजरा तथा चावल के दाने मिले हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

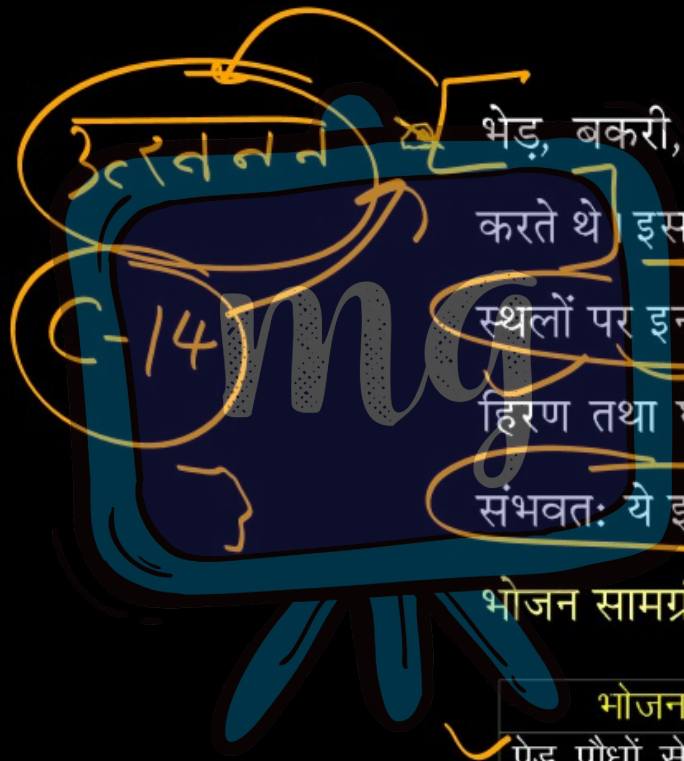

भेड़, बकरी, भैंस और सुअर के मांस का सेवन करते थे। इसकी पुष्टि इस बात से हुई है कि हड़प्पा स्थलों पर इनकी हड्डी मिली है।

हिरण तथा घड़ियाल की भी हड्डियां मिली है।

संभवतः ये इनके मांस का भी सेवन करते थे।

भोजन सामग्री उपलब्ध कराने वाले समूह

भोजन सामग्री	समूह
पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद	संग्राहकों द्वारा
मांस तथा मछली	आखेटकों द्वारा
गेहूं, जौ, दाल, सफेद चना, तिल, बाजरा	किसानों द्वारा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

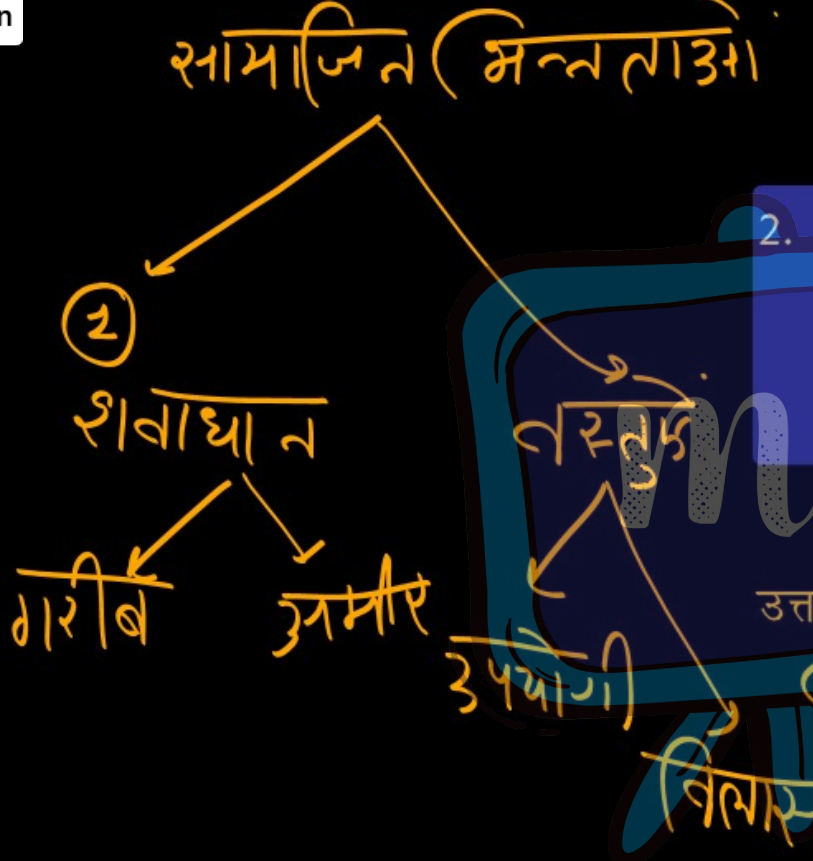

2. पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं का पता किस प्रकार लगाते हैं ? वे कौनसी भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं ?

उत्तर : पुरातत्वविद हड़पई समाज में रहने वाले लोगों के बीच सामाजिक तथा आर्थिक भिन्नताओं का पता लगाने के लिए कई विधियों का प्रयोग करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पुनर्जन्म

1. शवाधान द्वारा : हड़प्पाई लोग शवों के गर्तो में दफनाते थे। आर्थिक एवं सामाजिक स्तरानुसार ये गर्ते भिन्न प्रकार की होती थी। कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की गयी थी अत: वे उच्च स्तर के लोग होंगे।

कुछ कब्रों में मृदभाण्ड एवं आभूषण मिले हैं। कुछ पुरूषों एवं महिलाओं की कब्रों में आभूषण मिल हैं। अत: ये भी उच्च स्तर के होंगे। कहीं-कहीं पर कब्रों में तांबे के दर्पण भी मिले हैं अत: ये भी किसी विशेष वर्ग के लोग होंगे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

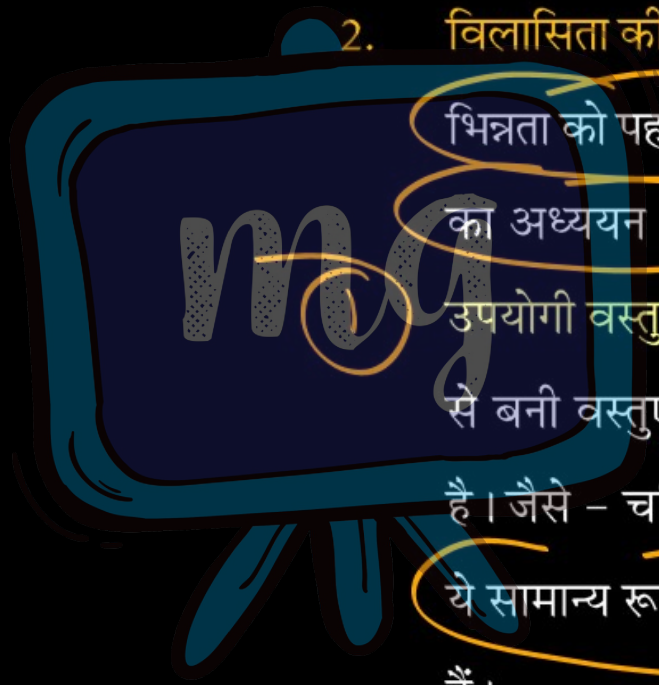

2. **विलासिता की वस्तुओं की खोज के द्वारा :** सामाजिक भिन्नता को पहचानने का एक अन्य तरीका पुरावस्तुओं का अध्ययन भी है।

उपयोगी वस्तुएं : पत्थर व मिट्टी जैसे सामान्य पदार्थों से बनी वस्तुएं जिन्हें आसानी से बनाया जा सकता है। जैसे – चक्कियां, मृदभाण्ड, सुईयां, झांबा आदि। ये सामान्य रूप से सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

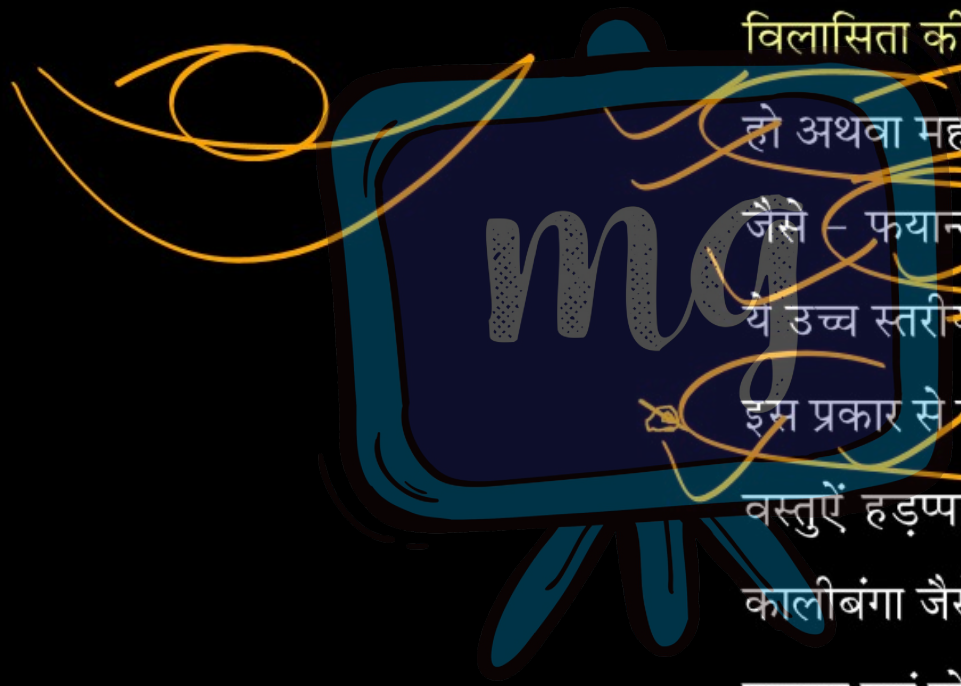

विलासिता की वस्तुएं : वे कीमती वस्तुऐं जो दुर्लभ हो अथवा महंगी तथा स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध जैसे – फयान्स से बने पात्र

ये उच्च स्तरीय लोग ही काम में लेते होंगे।

इस प्रकार से समाज में विषमताऐं थी तथा ये महंगी वस्तुऐं हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों में ही मिली है। कालीबंगा जैसे स्थानों पर बिल्कुल भी नहीं। अतः हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के लोगों का आर्थिक स्तर उच्च रहा होगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

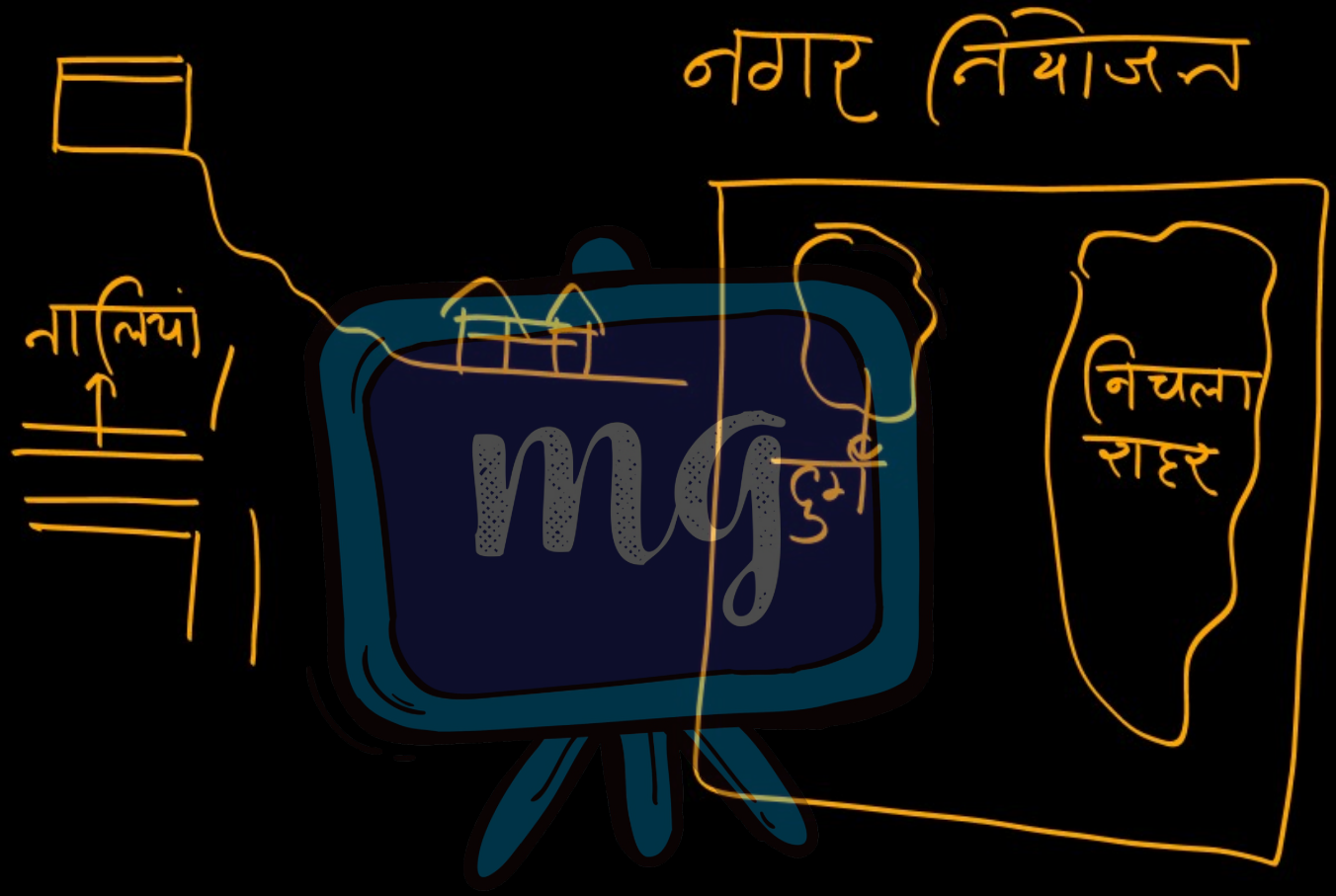

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

3. क्या हम इस तथ्य से सहमत है कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली, नगर योजना की ओर संकेत करती है ? अपने स्तर के कारण बताइये ?

उत्तर : हम इस तथ्य से पूर्णतया सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली नगर योजना की ओर संकेत करती है इसकी पुष्टि निम्न तथ्यों से होती है–

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. नगरों में नालियों का जाल बिछा हुआ था। पहले नालियों के साथ गलियों में बनाया गया था और फिर उसके आसपास आवासों का निर्माण किया गया था। मकानों से आने वाली नालियां गली की नाली से मिलती थी। प्रत्येक मकान की कम से कम एक दीवार गली से सटी होती थी ताकि मकानों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ा जा सके।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



2. मुख्य नाले ईंटों के बने थे तथा सफाई के लिए भी ऐसी ईंटों से ढके रहते थे जो हटायी जा सके। कई स्थानों पर ढकने के लिए चूने पत्थर की पट्टी का उपयोग करते थे।
3. घरों की नालियां पहले एवं होदी या मलकुंड में खाली होती थी जिनमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था। इन नालों से गंदा पानी शहर के बाहर निकाल दिया जाता था।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Ques → विशेषता/कारण/+ve/-ve.

अंतर

1	2



Ques → लघु लेख



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

मनके

- स्थल : चान्दहूदडो
- पदार्थ → स्थल

चीजें
- सोने
- कांस्य
- ताम्बे
- शीलरनडी

प्रक्रिया
- चीज़ें → बांट
- रंग → पॉलिश
- मनके

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

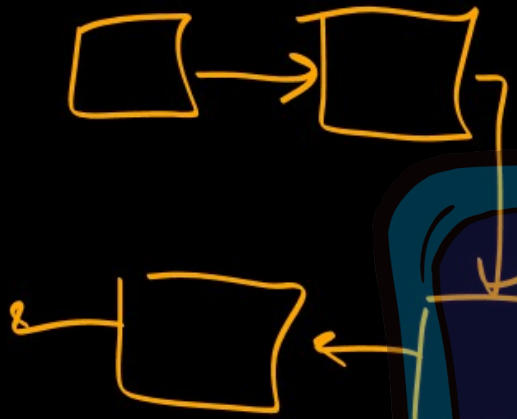

4. हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइये। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मनके बनाने के लिए अनेक पदार्थों का प्रयोग किया जाता था। कार्निलियन नामक सुंदर लाल पत्थर के, जैस्पर, स्फाटिक, क्वार्टज, सैलखड़ी नामक पत्थर से तथा तांबा, सोना, कांसा जैसी धातुओं से तथा शख, फयान्स व पक्की मिट्टी के मनके बनाये जाते थे। चन्हूदड़ों के मनके बनाने का कारखाना था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

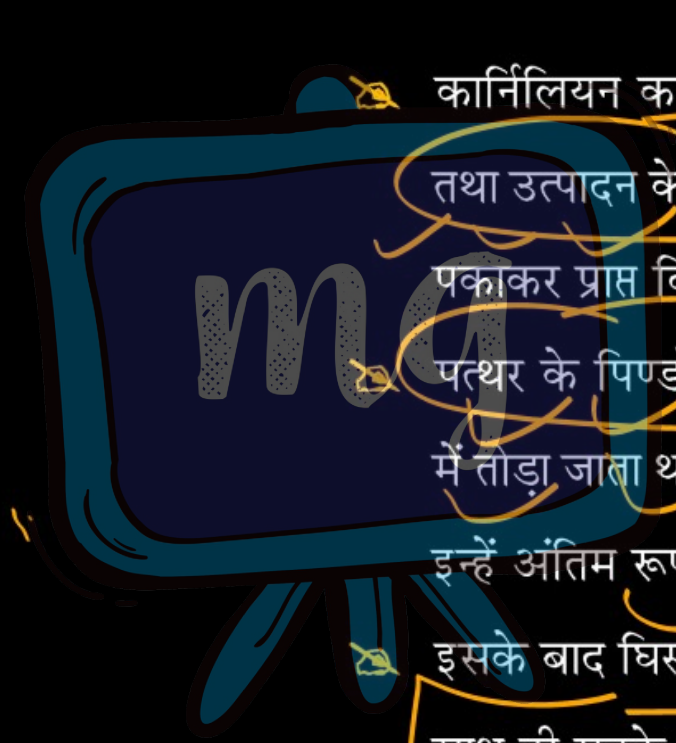

- कार्निलियन का लाल रंग, पीले रंग के कच्चे माल तथा उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनकों को आग में पकाकर प्राप्त किया जाता था।
- पत्थर के पिण्डों को को पहले अपरिष्कृत आकारों में तोड़ा जाता था। फिर बारीकी से शल्क निकालकर इन्हें अंतिम रूप दिया जाता था।
- इसके बाद घिसाई, पॉलिस और इनमें छेद करने के साथ ही मनके बनाने की प्रक्रिया पूरी होती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सेलखड़ी से मनके बनाने की प्रक्रिया : सेलखड़ी के चूर्ण के लेप को सांचे में ढाल कर मनके तैयार किये जाते थे।

इससे ठोस पत्थरों से बनने वाले केवल ज्यामितीय आकारों के विपरीत कई विभिन्न आकारों के मनके बनाये जा सकते हैं

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



5. चित्र का वर्णन करो। शव किस प्रकार रखा गया है? इसके समीप कौनसी वस्तुएं रखी गयी हैं? क्या शरीर पर कोई पुरावस्तुएं हैं? क्या इनसे कंकाल के लिंग का पता लगता है?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

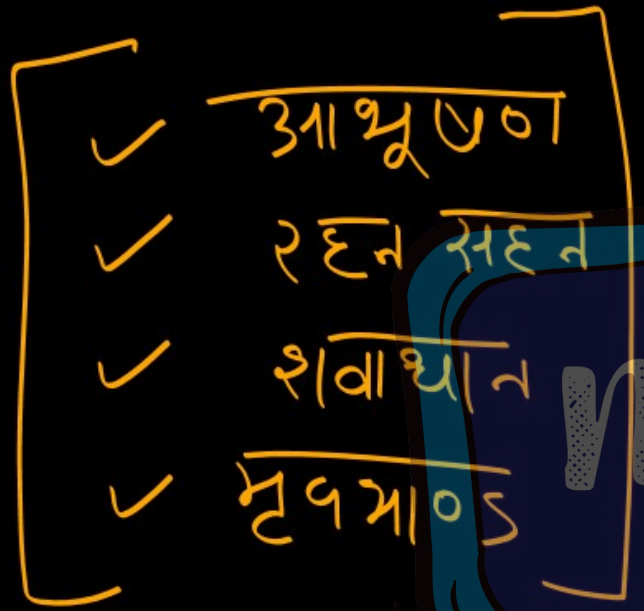

उत्तर :

- चित्र में एक हड़प्पाई शव है।
- शवाधान में एक कंकाल दफन है।
- शव उत्तर दक्षिण दिशा में रखा गया है।
- शव के पास कुछ बर्तन व अन्य वस्तुएं रखी हुई हैं। जो आत्मा एवं पुर्नजन्म के विश्वास को बताती है।
- शव पर एक चूड़ी है जो इंगित करती है कि यह एक महिला का कंकाल है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6. मोहनजोदड़ों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मोहनजोदड़ों (एक नियोजित शहरी केन्द्र) :- पहले बस्ती का नियोजन

सबसे प्रसिद्ध पुरास्थल

बस्ती दो भागों में विभाजित :

1. दुर्ग (पश्चिमी भाग) [छोटा लेकिन ऊंचाई पर बसा हुआ]।

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. निचला शहर (पूर्वीभाग) [बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया]।

- यह भी दीवार द्वारा घेरा गया था। लेकिन फिर भी कई भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने थे।
- नियोजित जल निकास प्रणाली की अनूठी विशिष्टता थी।
- पहले नालियों के साथ गलियों को बनाकर फिर उसके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया।
- सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनायी थी जो एक दूसरे को समकोण पर भी काटती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

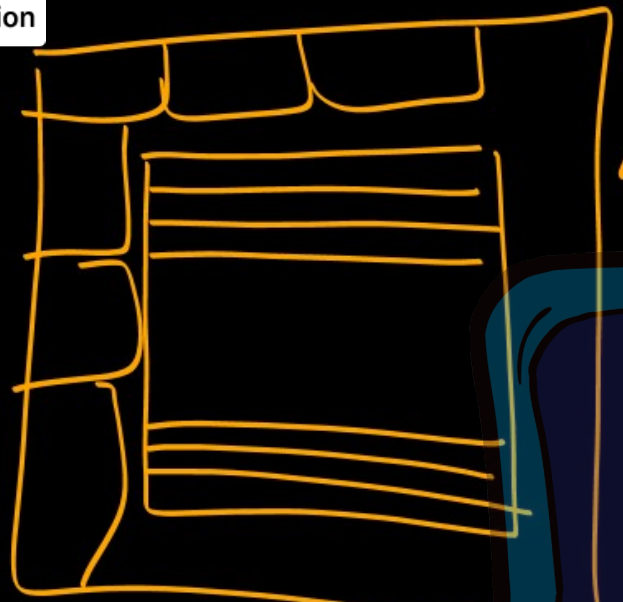

दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ मिली हैं।

(i) मालगोदाम :-

- ईंटों से बने इनके निचले हिस्से ही शेष हैं। ऊपरी हिस्से संभवत: लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गये।

(ii) विशाल स्नानागार :-

- चारों ओर से गलियारों से घिरा।
- तल तक जाने के उत्तरी व दक्षिणी भाग में सीढियाँ
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे का प्रयोग कर इसे जलबद्ध किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इसके तीनों ओर कक्ष बने हैं, जिसमें 1 में 1 बड़ा कुआँ हैं।
- जलाशय का पानी एक बड़े नाले में जाता है।
- दूसरी ओर 8 स्नानघर हैं।
- ये स्नानघर एक गली के दोनों ओर 4-4 हैं।
- प्रत्येक स्नानघर की नालियां गली के नाले से मिलती है।
- इसकी विशालता एवं अनोखापन यह दर्शाता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए होगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

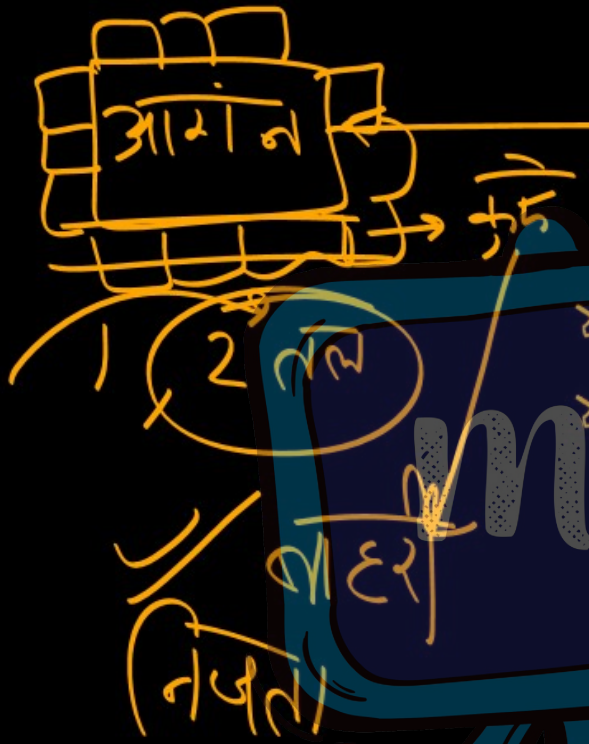

गृह स्थापत्य :-

- निचले शहर में आवासीय भवन के शानदार
- भवनों में बीच में आँगन था जिसके चारों ओर कमरे बने थे। संभवतः यह ऑगन खाना खाना पकाने और कताई करने का केन्द्र था। गर्म एवं शुष्क मौसम में।
- लोग अपनी एकांतता को महत्व देते थे क्योंकि भूमितल की दीवारों में खिड़कियां नहीं है तथा मुख्य द्वार से आंतरिक भागों तथा आंगन का सीधा अवलोकन नहीं होता।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- प्रत्येक घर में ईंटों के फर्श का स्नानाघर था जिसकी नालियां दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।
- दूसरे तल या छत पर जाने के लिए सीढ़ियों के अवशेष मिले हैं।
- कई भवनों के सबसे बाहरी कक्ष में जो प्रवेश द्वार पर होता था उनमें कुएं मिले हैं जो संभवत: राहगीरों के लिए प्रयुक्त किये जाते होंगे।
- मोहनजोदड़ों में लगभग 700 कुऐं मिले हैं।